

ईसा मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मुसलमानों की आस्था

﴿ اعتقاد المسلمين في المسيح عليه السلام ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندي]

मुहम्मद सालेह अल-मुनजिद

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ اعتقاد المسلمين في المسيح عليه السلام ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

IslamHouse.com



बिस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

ईसा मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मुसलमानों की आस्था

प्रश्न:

मरियम के बेटे ईसा मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मुसलमानों की क्या आस्था है?

उत्तर:

हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति अल्लाह के लिए योग्य है।

मरियम के बेटे ईसा मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में हमारा विश्वास और आस्था वही है जो अल्लाह की किताब और हमारे

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से पता चलता है।

चुनाँचि हम विश्वास रखते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दा, और उसके भेजे हुये पैगंबरों में से एक पैगंबर हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल की ओर भेजा था कि आप उन्हें अल्लाह तआला की तौहीद और उसकी इबादत की ओर बुलायें।

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ﴾ [الصف: ٦]

"और (याद करो उस समय को) जब मरियम के पुत्र ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा, हे (मेरे समुदाय) इस्राईल की औलाद! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का पैगम्बर हूँ, अपने से पूर्व ग्रन्थ तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ और एक पैगम्बर की शुभ सूचना देने वाला हूँ जो मेरे पश्चात आए गा जिसका नाम अहमद है। फिर जब वह उनके पास स्पष्ट प्रमाण लाए तो यह कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।" (सूरतुस्सफ: ६)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ﴾ [المائدة: ११२]

"और मसीह ने कहा कि ऐ इस्राईल के बेटो! मेरे रब और अपने रब अल्लाह की इबादत करो, क्योंकि जो शिर्क करेगा अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।" (सूरतुल माइदा : ७२)

अतः ईसा अलैहिस्सलाम पूज्य नहीं हैं, और न ही अल्लाह के बेटे हैं जैसाकि ईसाईयों का यह भ्रम है।

अल्लाह अज़्जा व जल्ल का फरमान है :

﴿لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ﴾ [المائدة: १८]

"वो लोग काफिर हो गये जिन्होंने ने कहा कि मरियम का बेटा मसीह ही अल्लाह है।" (सूरतुल माइदा : ७२)

तथा अल्लाह जल्ला शानुहु ने फरमाया :

﴿وَقَالَتِ الْيَهُودُ عِزَّى ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَنَلَهُمُ اللَّهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾ [التوبة: ३०]

"यहूद तो कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह (ईसा) अल्लाह के बेटे हैं, ये तो उनके अपने मुँह की बातें हैं जिनके द्वारा ये लोग भी उन्हीं काफिरों की बातों की मुशाबहत कर रहे हैं जो इनसे पहले गुजर चुके हैं, अल्लाह इन्हें क़त्ल (तहस नहस) करे ये कहाँ से कहाँ भटके जा रहे हैं।" (सूरतुत्तौबा : ३०)

जब अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम को माँ के गोद ही में बोलने की शक्ति प्रदान की, तो उन्होंने ने सर्वप्रथम बात यही कही :

﴿ قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ءَاتَنِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ﴾ [مریم: ۳۰]

"(बच्चा) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब प्रदान किया है और मुझे अपना दूत (पैगम्बर) बनाया है।" (सूरत मरियम : ३०)

तथा हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला ने उनका ऐसी निशानियों (चमत्कारों) के द्वारा समर्थन किया जो उनकी सच्चाई का पता देती हैं।

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ إِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴾ [المائدة: ١١٠]

"(और याद करो उस समय को) जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के बेटे ईसा ! अपने और अपनी माँ के ऊपर मेरी नेमत को याद करो जब मैं ने पवित्र आत्मा (जिब्रील) के द्वारा तुम्हारी

मदद की, तुम पालने में और अधेड़ उम्र में लोगों से बात करते रहे और जब हम ने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील का ज्ञान दिया, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया की मूरत बनाते थे और उस में फूँकते थे तो वह मेरे हुक्म से (सचमुच) चिड़िया बन जाती थी और मेरे हुक्म से पैदाईशी अन्धे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को (ज़िन्दा करके क़ब्रों से) निकाल खड़ा करते थे और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जिस समय तुम उन के पास मोज़िज़े लेकर आए तो उनमें से काफ़िर लोग कहने लगे यह तो बस खुला हुआ जादू है।" (सूरतुल माइदा : ११०)

तथा हम यह विश्वास रखते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम कुंवारी मरियम से बिना बाप के पैदा हुये, और यह अल्लाह की शक्ति से असंभव नहीं है जिसकी महिमा यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो मात्र उस से यह कहता है कि "हो जा", बस वह तुरन्त हो जाती है।

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ﴾ [آل عمران: ५९]

"अल्लाह तआला के पास ईसा की मिसाल आदम की तरह है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया कि हो जा, बस वह हो गया।" (सूरत आले इम्रान : ५९)

तथा अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ إِذْ قَالَتِ الْمَلَكَةُ يَمْرَيْمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ٤٥ ﴾ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ ٤٦ ﴾ قَالَتْ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ٤٧ ﴾ [آل عمران: ٤٥ - ٤٧]

"(और उस समय को याद करो) जब फरिश्तों ने कहा, हे मरियम! अल्लाह तआला तुझे अपने एक कलिमा की शुभसूचना देता है जिसका नाम मसीह ईसा बिन मरियम है, जो दुनिया और आखिरत में सम्मानित है और वह मेरे निकटवर्तियों में से है। वह लोगों से पालने में बात करे गा और अधेड़ उम्र में भी, और वह नेकों में से होगा। कहने लगी, मेरे रब ! मुझे लड़का कैसा होगा? हालांकि मुझे किसी मर्द ने छुआ भी नहीं है। फरिश्ते ने कहा, इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब कभी वह किसी काम को करना चाहता है तो मात्र कह देतो है कि "हो जा" तो वह हो जाता है।" (सूरत आल इम्रान : ४५-४७)

तथा हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम ने यहूदियों के लिए कुछ चीजें हलाल ठहरा दीं जो उन पर पहले हराम थीं।

अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में फरमाया कि उन्होंने ने बनी इस्राईल से कहा :

﴿وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ
وَجِئْتُكُمْ بِبَيِّنَاتٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا﴾ [آل عمران: ٥٠]

"और मैं तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ जो मेरे सामने है, और मैं इसलिये आया हूँ कि तुम पर कुछ उन चीज़ों को हलाल करूँ जो तुम पर हराम कर दी गयी हैं, और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानियाँ लाया हूँ, इसलिये तुम अल्लाह से डरो और मेरी ही पैरवी करो।" (सूरत आल इम्रान : ५०)

तथा हम यह विश्वास रखते हैं कि उनकी मृत्यु नहीं हुई है और न ही उन्हें उनके दुश्मन यहूदियों ने क़त्ल किया है, बल्कि अल्लाह तआला ने उन्हें उन से छुटकारा दिलाया, और उन्हें जीवित आसमान पर उठा लिया।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल का फरमान है :

﴿فِيمَا نَقَضَهُمْ مِّيثَقَهُمْ وَكُفِّرَهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝١٥٥ وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ بُهْتَنًا عَظِيمًا ۝١٥٦ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِن شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا ابْتِغَاءَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝١٥٧ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝١٥٨﴾ [النساء: १५५ - १५८]

"और उन के कुफ़्र के कारण और मरियम पर बुहतान (आरोप) लगाने की वजह से। और उन के यह कहने के कारण कि हम ने मरियम के बेटे मसीह को क़त्ल कर दिया, हालांकि न तो उन्होंने ने क़त्ल किया न उन्हें फाँसी दी, लेकिन उन के लिये शबीह

(समरूप) बना दिया गया। यकीन करो कि ईसा के बारे में मतभेद करने वाले उनके बारे में शक में हैं, उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं सिवाय गुमान (भ्रम) वाली बातों पर अमल करने के, इतना सुनिश्चित है कि उन्होंने उनका क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया और अल्लाह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।" (सूरतुन्निसा : १५५-१५८)

तथा हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि ईसा मसीह ने अपने मानने वालों को हमारे पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन की शुभसूचना दी।

अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنَىٰ إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ﴾ [الصف: ६]

"और (याद करो उस समय को) जब मरियम के पुत्र ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा, हे (मेरे समुदाय) इस्राईल की औलाद! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का पैग़म्बर हूँ, अपने से पूर्व ग्रन्थ तौरात की पुष्टि करने वाला हूँ और एक पैग़म्बर की शुभ सूचना देने वाला हूँ जो मेरे पश्चात आए गा जिसका नाम अहमद है। फिर जब वह उनके पास स्पष्ट प्रमाण लाए तो यह कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।" (सूरतुस्सफ: ६)

तथा हम यह भी विश्वास रखते हैं कि वह अंतिम काल में उतरेंगे, तो अपने दुश्मन यहूदियों के इस भ्रमित दावे को झुठला देंगे कि उन्होंने ने उन्हें क़त्ल कर दिया, तथा ईसाईयों के इस

दावे का भी खण्डन करेंगे कि वह स्वयं अल्लाह या अल्लाह के बेटे हैं, और उन से केवल इस्लाम ही को स्वीकार करेंगे।

इमाम बुखारी (हदीस संख्या: २२२२) और मुस्लिम (हदीस संख्या: १५५) ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "उस हस्ती की कसम जिस के हाथ में मेरी जान है! निश्चित रूप से करीब है कि ईसा बिन मरियम तुम्हारे बीच एक इंसफवर (न्यायाधीश) शासक बनकर उतरें, (और एक हदीस के शब्द यह हैं कि क्रियामत नहीं आयेगी यहाँ तक कि तुम्हारे बीच इब्ने मरियम एक इंसफवर (न्यायाधीश) शासक बनकर उतरें), फिर वह सलीब को तोड़ देंगे, सुअर को मार डालेंगे, जिज़्या (टैक्स) को समाप्त कर देंगे, तथा धन की बहुतायत हो जायेगी यहाँ तक कि कोई उसे स्वीकार नहीं करेगा।"

हदीस के शब्द : (करीब है) का अर्थ यह है कि ऐसा शीघ्र ही अवश्य होगा।

(तुम्हारे बीच) से अभिप्राय यह उम्मत है।

(इंसफवर हाकिम) का अर्थ न्याय करने वाला शासक है, इस से अभिप्राय यह है कि वह इस शरीअत के अनुसार फैसला करने वाला बन कर उतरेंगे, क्योंकि यह शरीअत निरंतर बाक़ी रहेगी निरस्त नहीं की जायेगी, बल्कि ईसा अलैहिस्सलाम इस उम्मत के शासकों में से शासक होंगे।

(सलीब को तोड़ डालेंगे, और सुअर को क़त्ल करेंगे) का मतलब यह है कि वास्तव में सलीब को तोड़ कर ईसाईयों के धर्म को

असत्य ठहरायेंगे, और ईसाई लोग जो उस का झूठा सम्मान करते हैं, उस को खंडित करेंगे।

(जिज़्या को समाप्त कर देंगे) इसके बार में

इमाम नववी कहते हैं:

इसका शुद्ध अर्थ यह है कि : वह इसे स्वीकार नहीं करेंगे, और काफिरों से केवल इस्लाम क़बूल करना ही स्वीकार करेंगे, और उन में से जो जिज़्या देना चाहेगा तो उसके कारण उस से हाथ नहीं रोकेंगे, बल्कि केवल इस्लाम या क़त्ल ही स्वीकार करेंगे। इमाम अबू सुलैमान अल-खत्ताबी और अन्य विद्वानों रहिमहुमुल्लाह ने इसी प्रकार कहा है। (नववी की बात समाप्त हुई।)

(धन की बहुतायत हो जायेगी) अर्थात् धन की रेलपेल हो जायेगी, और उसके बहुतायत का कारण न्याय की वजह से और अत्याचार न होने से बरकतों का उतरना, और भलाईयों और अच्छाईयों का प्रसार होगा, उस वक़्त धरती अपने खज़ानों को निकाल देगी, और लोगों के अन्दर माल को जमा करने की इच्छा कम जायेगी क्योंकि उन्हें क्रियामत के करीब होने का ज्ञान होगा।

फिर इसके बाद ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो जायेगी, और मुसलमान उन पर जनाज़ा की नमाज़ पढ़ेंगे और उन्हें दफन कर देंगे।

इमाम अहमद (हदीस संख्या : ९३४९) ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप ने फरमाया: "मैं लोगों में ईसा बिन मरियम का सब से अधिक योग्य हूँ, क्योंकि मेरे और उनके बीच कोई ईशदूत नहीं है ... फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंतिम समय काल में उनके दुनिया में उतरने का उल्लेख किया है। फिर फरमाया: अल्लाह तआला जितना चाहे गा वह (इस दुनिया में) ठहरेंगे, फिर अल्लाह तआला उन्हें मृत्यु दे देगा, चुनाँचि मुसलमान उन पर जनाज़ा की नमाज़ पढ़ेंगे और उन्हें दफन कर देंगे।" (अल्बानी ने अस्सिलसिला अस्सहीहा (२१८२) में इस सहीह कहा है)।

तथा हम इस बात पर भी विश्वास रखते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम क्रियामत के दिन उन लोगों से अपनी बराअत (अलगाव) ज़ाहिर करेंगे जिन्होंने उनका बारे में पूज्य (भगवान) होने का भ्रम रखा।

अल्लाह तआला फरमाता है :

﴿وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّي إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعَلَّمَ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ ۚ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مِمَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾ [المائدة: ١١٦ - ١١٧]

"(और वह वक्त भी याद करो) जबकि अल्लाह कहेगा कि हे ईसा इब्ने मरियम, क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना? (ईसा) कहेंगे कि मैं तो तुझे पवित्र समझता हूँ, मुझ को किस तरह से शोभा देती है कि मैं ऐसी बात कहता जिस के कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं, अगर मैं ने कहा होगा तो तुझ को उस का ज्ञान होगा, तू तो मेरे दिल की बात जानता है, मैं तेरे जी में जो कुछ है उस को नहीं जानता, सिर्फ तू ही गैबों (परोक्ष बातों) का जानने वाला है। मैं ने उन से केवल वही कहा जिसका तू ने मुझे हुक्म दिया कि अपने रब और मेरे रब अल्लाह की इबादत करो, और जब तक मैं उन में रहा उन पर गवाह रहा और जब तू ने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक (निगराँ) था और तू हर चीज़ पर गवाह है।" (सूरतुल माइदा : ११६-११७)

तो यह है मरियम के बेटे ईसा मसीह के बारे में मुसलमानों की आस्था और विश्वास।

इमाम बुखारी (हदीस संख्या : ३४३५) और इमाम मुस्लिम (हदीस संख्या : २८) ने उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जिस ने इस बात की गवाही दी कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं वह अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दा और रसूल हैं, और यह कि ईसा अल्लाह के बन्दा, उसके रसूल और उसके कलिमा हैं जिसे उस ने मरियम की ओर डाला

था और उसके रूह हैं, और यह कि स्वर्ग सत्य है और नरक सत्य है तो अल्लाह तआला उसे, स्वर्ग के आठों फाटकों में से जिस से भी चाहे, स्वर्ग में दाखिल कर देगा।"

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें ईमान पर सुदृढ़ रखे और उसी पर हमें मृत्यु दे।

और हमारे पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला की दया और शान्ति अवतरित हो।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर